

लिंग

नर चाहे मादा के बोध करवया सबदवझन के लिंग
कहल जाहे। खोरठाझ् खाली जीउ—जन्तु ले लिंगेक
बिचार हे। लिंगेक जाइत कहल जाहे—सदानी भासा बा
छेतरीय भासाझ् लिंगेक सवाल भिनु नखे। सेले जाइत
माने मरद जाइत आर जनी जाइत। माने कहल जाइ
पारे जे खोरठा सबदेक कोनो लिंग नाझ् हवो हइ।
लिंगधारी परानी खातिर लिंग बनवेक कुछ विधान हइ।
तकरे आधारे मुझख रूपे तीन लिंग हवो हइ —

1. पुलिंग
2. इस्तीरिलिंग
3. लुपुंग (नपुंसक) लिंग

* बिधान 1 :- ‘वाइन’ परतइ जोइर के इस्तीरिलिंग
बनवेक —

पुलिंग

महतो

साधु

इस्तीरिलिंग

महतवाइन

सधुवाइन

गुरु

गुरुवाइन

बाबू

बबुवाइन

* विधान 2 :- 'न', 'इन' जोड़ के इस्तीरिलिंग बनवेक

—

पुलिंग

इस्तीरिलिंग

तेली

तेलिन

सुँडी

सुँडिन

बाउरी

बाउरिन

भगत

भगतिन

कुम्हार

कुम्हारिन / कुम्हाइन

साँढ

साँढिन

बाघ

बाघिन

कोइरी

कोइरिन

साथी

साथिन

बढ़ी

बढ़िन

* बिधान 3 :- 'आइन' परतइ जोइर के इस्तीरिलिंग बनवेक -

<u>पुलिंग</u>	<u>इस्तीरिलिंग</u>
सेठ	सेठाइन
साहु	सहुआइन
बेदिया	बेदिआइन
बनिया	बनिआइन
माँझी	मंझिआइन

* बिधान 4 :- 'ई' परतइ जोइर के इस्तीरिलिंग बनवेक

<u>पुलिंग</u>	<u>इस्तीरिलिंग</u>
बड़का	बड़की
मुरगा	मुरगी
बांभन	बांभनी
काका	काकी
मोसा	मोसी

आजा	आजी
काड़ा	काड़ी
कुकुर	कुकरी
पाँठा	पाँठी

* बिना विधान के लिंग-रद-बदल

बाबू	— नुनी
लेरू	— फेटाइन
काड़ा	— भइंस
मरद	— जेनी/जनी
हरवाहा	— रोपनी
खाटी	— खइटली/खटउली
सूप	— सुपली
बाबू	— मझंयां
लोटा	— लोटनी

❖ लुपुंग लिंग – जे सबद ना नर के बोध करावे ना
मादा के, जइसन—पहार , टुँगरी , गाछ, पझना , जतरा,
पानी, झागर, सोना आरो—आरो । खोरठाज् लुपुंग लिंग
सबदे बेसी हइ । मकिन एकर छाडा कुछु सबदवझन
अझसन हवो हइ जे दुझयो लिंग खातिर परजोग हवो
हइ । जेरकम – अगुवा , गीदर , पोहना आरो—आरो ।